**C.B.S.E**

**कक्षा : 10**

**विषय : हिंदी A**

**समय : 3 घंटे**

**पूर्णांक : 80**

---

**सामान्य निर्देश:**

**1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।**

**2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।**

**3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।**

**4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।**

**5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।**

**6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।**

## खंड - क

## [अपठित अंश]

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(2×4=8) (1×2=2) [10]

एक समय की बात एक गाँव में एक कुम्हार रहता था। एक दिन नशे की हालत में वह एक घड़े पर गिर गया और उसके माथे पर एक घाव लग गया। चिकित्सा के बाद भी उसके माथे पर एक निशान रह गया। कुछ समय के पश्चात देश में अकाल पड़ा और कुम्हार नौकरी की तलाश में अन्य देश में गया। राजा के महल में एक नौकरी मिल गई। राजा ने निशान देखकर सोचा कि कुम्हार एक अच्छा योद्धा रहा होगा। राजा उसे अतिरिक्त सम्मान देना शुरू कर दिया। एक दिन दुश्मन राज्य ने राज्य के खिलाफ युद्ध छेड़ा। राजा ने कुम्हार को अपनी सेना का नेतृत्व करने कहा, तब कुम्हार ने कहा मैं योद्धा

नहीं था और निशान के बारे में कहानी बताई। राजा अपने अज्ञान के लिए शर्मिंदा थे।

1. कुम्हार को घाव कैसे लग गया?

   उत्तर : एक दिन नशे की हालत में कुम्हार एक घड़े पर गिर गया और उसके माथे पर घाव लग गया।

2. कुम्हार अन्य देश क्यों गया?

   उत्तर : देश में अकाल पड़ने के कारण नौकरी की तलाश में कुम्हार अन्य देश गया।

3. कुम्हार को राजा के महल में कौन-सी नौकरी मिली? क्यों?

   उत्तर : कुम्हार को राजा के महल में योद्धा की नौकरी मिली। क्योंकि राजा ने कुम्हार के माथे पर लगा निशान देखकर सोचा कि कुम्हार एक अच्छा योद्धा रहा होगा।

4. राजा ने कुम्हार को अतिरिक्त सम्मान देना क्यों शुरू कर दिया?

   उत्तर : राजा ने कुम्हार के माथे पर लगा निशान देखकर सोचा कि कुम्हार एक अच्छा योद्धा रहा होगा। इसी वजह से उन्होंने कुम्हार को अतिरिक्त सम्मान देना शुरू कर दिया।

5. आपको यह गद्यांश पढ़कर क्या सीख मिलती है?

   उत्तर : यह गद्यांश पढ़कर यह सीख मिलती है कि हमेशा पूरी सच्चाई जान लेनी चाहिए क्योंकि जरुरी नहीं हर बार जैसा दिखता है वैसा हो।

6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दें।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक 'कुम्हार का घाव' है।

## खंड - ख

## [व्यावहारिक व्याकरण]

प्र.2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। (1x4=4)

1. मेरे कमरे में एक पुरानी घड़ी है। (मिश्र वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)

   उत्तर : मेरे कमरे में जो घड़ी है, वह पुरानी है।

2. वह बाजार गया, क्योंकि उसे पुस्तकें खरीदनी थीं। (रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए।)

   उत्तर : संयुक्त वाक्य

3. सुबह हुई और मंदिर की घंटी बजने लगी। (मिश्र वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)

   उत्तर : जैसे ही सुबह हुई मंदिर की घंटी बजने लगी।

4. माता जी ने शीला को एक साड़ी दी। (रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए।)

   उत्तर : सरल वाक्य

प्र. 3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए। (1x4=4)

1. श्रेष्ठा अभी <u>नौंवी</u> कक्षा में है।

   उत्तर : नौंवी - निश्चित संख्यावाचक विशेषण, क्रमसूचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कक्षा विशेष्य।

2. राम पुस्तक पढ़ेगा।

उत्तर : पुस्तक - जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक।

3. वह नित्य घूमने जाता है।

उत्तर : नित्य - कालवाचक क्रियाविशेषण, पुल्लिंग, एकवचन।

4. माँ ने उसे बहुत मारा।

उत्तर : उसे - पुरुष वाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष वाचक, एकवचन, कर्मकारक, 'मारा' क्रिया का कर्म।

प्र. 4. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। (1x4=4)

1. सिपाही ने चोर को पकड़ा। (कर्मवाच्य)

उत्तर : सिपाही द्वारा चोर पकड़ा गया।

2. लड़कों द्वारा पतंग उड़ाई जा रही है। (कर्तृवाच्य)

उत्तर : लड़के पतंग उड़ा रहे हैं।

3. मैंने खाना खाया। (कर्मवाच्य)

उत्तर : मुझसे खाना खाया गया।

4. वह चलती नहीं। (भाववाच्य)

उत्तर : उससे चला नहीं जाता।

प्र.5. निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए। (1x4=4)

1. अँसुवन जल सिंची-सिंची प्रेम-बेलि बोई
   मीरा की लगन लागी, होनी हो सो होई
   उत्तर : भक्ति रस

2. सीस पर गंगा हँसे, भुजनि भुजंगा हँसैं,
   हास ही को दंगा भयो नंगा केविवाह में। (पद्माकर)
   उत्तर : हास्य रस

3. 'शोक' किस रस का स्थायी भाव है?
   उत्तर : करुण रस

4. 'रौद्र रस' का स्थायी भाव क्या है?
   उत्तर : क्रोध

## खंड - ग

## [पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पुस्तक]

प्र. 6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (3×2=6)

इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी, पर अर्थ नहीं और शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्वकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-

थरथराती रहती थीं। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

(क) मन्नू भंडारी के पिता की गिरती आर्थिक स्थिति का उन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : मन्नू भंडारी के पिता की गिरती आर्थिक स्थिति ने उनके पिता को अहंवादी, क्रोधी, शक्की और अन्तर्मुखी बना दिया था।

(ख) पहले इन्दौर में उनकी आर्थिक स्थिति कैसी रही होगी?

उत्तर : पहले इंदौर में उनकी आर्थिक स्थिति बड़ी अच्छी थी क्योंकि उनके पिता कांग्रेस के साथ जुड़े होने के साथ समाज-सुधार के कार्य भी किया करते थे। कई बच्चों को मुफ्त में पढ़ाया करते थे और काफ़ी दरियादिल थे।

(ग) मन्नू के पिता का स्वभाव शक्की क्यों हो गया था?

उत्तर : मन्नू भंडारी के पिता का स्वभाव अपने ही लोगों द्वारा विश्वासघात किए जाने के करण शक्की हो गया था।

प्र.7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (2x4=8)

1. खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?

उत्तर : बालगोबिन भगत एक गृहस्थ थे परन्तु उनमें साधु कहलाने वाले गुण भी थे -

1. कबीर के आर्दशों पर चलते थे, उन्हीं के गीत गाते थे। वे शरीर को नश्वर तथा आत्मा को परमात्मा का अंश मानते थे।
2. कभी झूठ नहीं बोलते थे, खरा व्यवहार रखते थे।
3. किसी से भी सीधी बात करने में संकोच नहीं करते थे, न किसी से झगड़ा करते थे।
4. किसी की चीज़ नहीं छूते थे न ही बिना पूछे व्यवहार में लाते थे। वे किसी दूसरे की चीज़ नहीं लेते थे।
5. उनके खेत में जो कुछ पैदा होता उसे एक कबीरपंथी मठ में ले जाते और उसमें से जो हिस्सा 'प्रसाद' रूप में वापस मिलता, वे उसी से गुज़ारा करते।
6. उनमें लालच बिल्कुल भी नहीं था। इस प्रकार वे अपना सब कुछ ईश्वर को समर्पित कर देते थे।

2. फ़ादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी?

उत्तर : फ़ादर बुल्के मानवीय करुणा से ओतप्रोत विशाल ह्रदय वाले और सभी के कल्याण की भावना रखने वाले महान व्यक्ति थे। देवदार का वृक्ष आकार में लंबा-चौड़ा होता है तथा छायादार भी होता है। फ़ादर बुल्के का व्यक्तित्व भी कुछ ऐसा ही है। जिस प्रकार देवदार का वृक्ष लोगों को छाया देकर शीतलता प्रदान करता ठीक उसी प्रकार फ़ादर बुल्के भी अपने शरण में आए लोगों को आश्रय देते थे।

हर व्यक्ति उनसे सहारा और स्नेह पा सकता था तथा दु:ख के समय में सांत्वना के वचनों द्वारा उनको शीतलता प्रदान करते थे।

3. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

उत्तर : मांगलिक विधि-विधानों के अवसर पर शहनाई बजाई जाती है। पारंपरिक अवधी लोकगीतों एवं चैती में शहनाई का उल्लेख बार-बार मिलता है। इस वजह से शहनाई को मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करने वाला वाद्य माना जाता है। उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ शहनाई वादन के क्षेत्र में अद्वितीय स्थान रखते हैं। इसी वाद्य में निपुणता के कारण वह भारत रत्न से सम्मानित हुए। इन्हीं कारणों के वजह से बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहा गया है।

4. नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंतत: सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

उत्तर : नवाब साहब द्वारा दिए गए खीरा खाने के प्रस्ताव को लेखक ने अस्वीकृत कर दिया। खीरे को खाने की इच्छा तथा सामने वाले यात्री के सामने अपनी झूठी साख बनाए रखने के उलझन में नवाब साहब ने खीरा खाने की सोची परन्तु जीत नवाब के दिखावे की हुई। और इसी इरादे से नवाब साहब ने खीरा सूँघ कर फेंक दिया। नवाब के इस स्वभाव से ऐसा प्रतीत होता है कि वो दिखावे की जिंदगी जीते हैं। खुद को अमीर सिद्ध करने के लिए वो कुछ भी कर सकते हैं।

5. शहर के मुख्य बाज़ार में प्रतिमा किसने लगवाईं थी और उस प्रतिमा की क्या विशेषता थी?

उत्तर : शहर के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी थी।

उस मूर्ति की विशेषता यह थी कि मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची और सुंदर थी। नेताजी फौजी वर्दी में सुंदर लगते थे। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और तुम मुझे खून दो... आदि याद आने लगते थे। केवल एक चीज की कसर थी जो देखते ही खटकती थी नेताजी की आँख पर संगमरमर चश्मा नहीं था बल्कि उसके स्थान पर सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था।

प्र.8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2 × 3 = 6)

मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज़ सुंदर कमजोर काँपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज़ में
वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से

निम्नलिखित पदयांशों से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मुख्य गायक की आवाज तथा संगतकार की आवाज में क्या अंतर है?

उत्तर : मुख्य गायक की आवाज अधिक दमदार तथा मनभावन होती है तथा संगतकार की आवाज कमजोर होती है। उसकी आवाज में सुर का पूरा उतार-चढाव दिखाई नहीं देता।

2. मुख्य गायक के लिए संगतकार की क्या उपयोगिता है?

उत्तर : मुख्य गायक की आवाज जब थकने लगती है तो सहयोगी संगतकार की आवाज उसे शक्ति देती है।

3. मुख्य गायक का साथ देने वाले कौन लोग हो सकते हैं?

उत्तर : मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार, उसका भाई, शिष्य या दूर का रिश्तेदार भी हो सकते हैं।

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (2x4=8)

1. स्वयंवर स्थल पर शिव धनुष तोड़ने वाले को परशुराम ने किस प्रकार धमकाया?

उत्तर : स्वयंवर स्थल पर शिव धनुष तोड़ने वाले को परशुराम ने धमकाते हुए कहा कि उनके इस शिव धनुष को तोड़ने वाला अब उनका शत्रु है। परशुराम कहते हैं कि जिस प्रकार से उन्होंने सहस्रबाहु का विनाश किया था ठीक उसी प्रकार अब इस शिव धनुष को तोड़ने वाले का भी होगा। श्रीराम के यह कहने पर कि आपके किसी दास ने ही यह कार्य किया होगा उसे सुनकर वे और अधिक क्रोधित हो उठते हैं और कहते हैं कि दास तो सेवा करता है। धनुष तोड़ने वाला कार्य तो शत्रु का ही होता है इसलिए जिसने भी यह कार्य

किया है वह उनके सामने आ जाय क्योंकि अब उसे कोई नहीं बचा सकता।

2. गोपियाँ कृष्ण को 'हारिल की लकड़ी' क्यों कहती है?

उत्तर : हारिल पक्षी एक लकड़ी को अपने पंजों में दिन-रात पकड़े रहता है। किसी भी हालत में वह उसे छोड़ता नहीं है। ठीक इसी प्रकार से गोपियों की भी स्थिति हैं वे किसी भी सूरत में कृष्ण को भूल नहीं सकती हैं। अतः इसी समानता के कारण वे कृष्ण को 'हारिल की लकड़ी' कहते हैं।

3. कविता का शीर्षक उत्साह क्यों रखा गया है?

उत्तर : कवि क्रांति लाने के लिए लोगों को उत्साहित करना चाहते हैं। बादलों में भीषण गति होती है उसी से वह संसार के ताप हरता है। कवि ऐसी ही गति, ऐसी ही भावना और शक्ति चाहता है। बादल का गरजना लोगों के मन में उत्साह भर देता है। इसलिए कविता का शीर्षक उत्साह रखा गया है।

4. 'कन्यादान' कविता की माँ परंपरागत माँ से भिन्न किस प्रकार से है?

उत्तर : परंपरागत माँ उस समयानुसार अपनी बेटी को जीवन से समझौता, ससुराल से तालमेल बिठाने, संघर्ष के विरुद्ध आवाज न उठाना का पाठ पढ़ाती थी। परंतु कन्यादान कविता की माँ उसे परांपरगत सीख न देते हुए कहती है कि वह अपनी सुंदरता पर न रीझे, न ही वस्त्र और आभूषणों के शाब्दिक भ्रम में फँसे। सारे कार्य और जिम्मेदारियों का उचित निर्वाह तो करें परंतु किसी अत्याचार को सहन न करें। वह ससुराल में अपने व्यक्तित्व को न खोने, शोषण

को न सहने, जीवन में कभी निराश न होने की सीख देती है। अत: कन्यादान कविता की माँ परंपरागत माँ से अनेक रूपों में भिन्न है।

5. 'छाया मत छूना' कविता में कवि ने छाया को छूने से मना क्यों किया हैं?

उत्तर : 'छाया मत छूना' कविता में छाया शब्द का प्रयोग सुखद अनुभूति के लिए किया है। कवि ने मानव की कामनाओं-लालसाओं के पीछे भागने की प्रवृत्ति को दुखदायी माना है। हम विगत स्मृतियों के सहारे नहीं जी सकते, हमें वर्तमान में जीना है। उन्हें छूकर याद करने से मन में दुख बढ़ जाता है।

प्र.10. निम्नलिखित पूरक पुस्तिका के प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए। [3×2=6]

1. 'आप चैन कि नींद सो सके इसीलिए तो हम यहाँ पहरा दें रहा है' - एक फौजी के इस कथन पर जीवन-मूल्यों कि दृष्टि से चर्चा कीजिए।

उत्तर : फौजी का जीवन बड़ा ही कठिन होता है। फौजी कठिन से कठिन परिस्थिति में अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। इस कर्तव्य पालन में कभी-कभी उन्हें अपनी जान भी कुर्बान करनी पड़ती है परंतु वे पीछे नहीं हटते क्योंकि एक फौजी के जीवन मूल्य अपने देश की रक्षा और नागरिकों की सुरक्षा ही होती है।

2. जॉर्ज पंचम की लाट की नाक को पुन: लगाने के लिए मूर्तिकार ने क्या-क्या यत्न किए?

उत्तर : मूर्तिकार के द्वारा किए गए यत्न निम्नलिखित हैं-

- मूर्ति के पत्थर के प्रकार आदि का पता न चलने पर व्यक्तिगत रूप से नाक लगाने की ज़िम्मेदारी लेते हुए देश भर के पहाड़ों और पत्थर की खानों का तूफ़ानी दौरा किया।
- उसने देश में लगे हर छोटे-बड़े नेताओं की मूर्ति की नाक से पंचम की लाट की नाक का मिलान किया ताकि उस मूर्ति से नाक निकालकर पंचम लाट पर नाक लगाई जा सके। परन्तु दुर्भाग्य से सभी की नाक जॉर्ज पंचम की नाक से बड़ी निकली।
- आखिर जब उसे नाक नहीं मिली तो हताश मूर्तिकार और चिन्तित एवम् आतंकित हुक्मरानों ने ज़िंदा इनसान की नाक लगवाने का परामर्श दिया और प्रयत्न भी किया।

3. भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर : भोलानाथ भी बच्चे की स्वाभाविक आदत के अनुसार अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेलने में रूचि लेता है। उसे अपनी मित्र मंडली के साथ तरह-तरह की क्रीड़ा करना अच्छा लगता है। वे उसके हर खेल व हुडदंग के साथी हैं। अपने मित्रों को मजा करते देख वह स्वयं को रोक नहीं पाता। इसलिए रोना भूलकर वह दुबारा अपनी मित्र मंडली में खेल का मजा उठाने लगता है। उसी मग्नावस्था में वह सिसकना भी भूल जाता है।

## खंड - घ

## [लेखन]

प्र. 11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। [10]

ग्लोबल वॉर्मिंग (भूमंडलीय ऊष्मीकरण)

ग्लोबल वॉर्मिंग (भूमंडलीय ऊष्मीकरण) का अर्थ ग्लोबल वार्मिंग धरती के वातावरण के तापमान में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। ग्लोबल वॉर्मिंग पृथ्वी की निकटस्थ-सतह वायु और महासागर के औसत तापमान में 20 वीं शताब्दी से हो रही वृद्धि और उसकी अनुमानित निरंतरता है। वैश्विक तापमान यानी ग्लोबल वार्मिंग आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है। इससे न केवल मनुष्य, बल्कि धरती पर रहने वाला प्रत्येक प्राणी त्रस्त परेशान है।

वायु मंडल में प्राकृतिक क्रियाओं के फलस्वरुप गैसों का संतुलन बना रहता है; किंतु आज मनुष्य ने अपने कार्य-कलापों से वायुमंडल को असंतुलित का दिया है। मानव निर्मित इन गतिविधियों से कार्बन डायआक्साइड, मिथेन, नाइट्रोजन आक्साइड इत्यादि ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में बढ़ोतरी हो रही है जिससे इन गैसों का आवरण सघन होता जा रहा है। यही आवरण सूर्य की परावर्तित किरणों को रोक रहा है जिससे धरती के तापमान में वृद्धि हो रही है।

भूमंडलीय तापमान बढ़ने से हिम, नदियों और पहाड़ों की बर्फ़ तेजी से पिघल रही है। इससे महासागर का जल स्तर बढ़ रहा है। ग्लैशियरों की बर्फ के पिघलने से समुद्रों में पानी की मात्रा बढ़ जाएगी जिससे साल-दर-साल उनकी सतह में भी बढ़ोतरी होती जाएगी। समुद्रों की सतह बढ़ने से प्राकृतिक तटों का कटाव शुरू हो जाएगा जिससे एक बड़ा हिस्सा डूब जाएगा। मौसम चक्र में भी बदलाव आ रहा है। गरमी में अधिक गरमी तथा सरदी में अधिक सरदी पड़ रही है। बिना मौसम के बरसात तथा तूफ़ान आ रहे है।

ग्लोबल वार्मिंग रोकने के लिए हम सब को एकजुट होकर इस दिशा में कदम बढ़ाने होगे। जंगलों की कटाई को रोकना होगा। हम सभी को अधिक से अधिक पेड़ लगाने होगे। पेट्रोल, डीजल और बिजली का उपयोग कम

करके हानिकारक गैसों को कम कर सकते हैं। धुआँ निकालने वाली मशीनों का प्रयोग बंद करना होगा।

## मित्रता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में हर व्यक्ति के अनेक संबंध होते हैं। परस्पर सहयोग से रहना मानव का स्वभाव है। उसका सही स्वभाव मित्रता को जन्म देता है।

मित्रता एक अनमोल धन है। आज के युग में युग में सच्चा मित्र पाना स्वर्ग को पा लेने के समान है। सच्चा मित्र वह होता है, जो हमें अच्छे व बुरे का अहसास करवाए, साथ ही हमें कुमार्ग से सुमार्ग पर ले जाए। मित्रता में वह शक्ति है, जो बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान कर सकती है।

मित्रता में मनुष्य एक-दूसरे का साथ देता है।

हर व्यक्ति को मित्र की आवश्यकता होती है। वह अपने दिल की हर बात निर्भयता से केवल अपने मित्र से कह सकता है। सच्चा मित्र अपने मित्र के सुख-दुख को अपना सुख-दुख मानता है।

रहीम जी ने कहा है –

''कह रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत
बिपत्ति-कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।''

अंग्रेजी कहावत के अनुसार सच्चा मित्र वही है जो समय पर काम आए।

कृष्ण-सुदामा की मित्रता नि:स्वार्थ एवं पवित्र थी। यह सच्ची मित्रता का अनुपम उदाहरण है।

हमें चाहिए कि जब भी किसी को अपना मित्र बनाए तो सोच-विचार कर बनाए क्योंकि जहाँ एक सच्चा मित्र आपका साथ दे आपको ऊँचाई तक पहुँचा सकता है। कपटी मित्र अपने स्वार्थ के लिए आपको पतन के रास्ते पर ले जाता है।

संत कबीर कहते हैं कि –

''कपटी मित्र न कीजिए, पेट पैठि बुधि लेत।
आगे राह दिखाय के, पीछे धक्का देति।।''

कपटी आदमी से मित्रता कभी न कीजिये क्योंकि वह पहले पेट में घुस कर सभी भेद जान लेता है और फिर आगे की राह दिखाकर पीछे से धक्का देता है।

'कबीर तहां न जाईय, जहां न चोखा चीत।
परपूटा औगुन घना, मुहड़े ऊपर मीत।'

ऐसे व्यक्ति या समूह के पास ही न जायें जिनमें निर्मल चित्त का अभाव हो। ऐसे व्यक्ति सामने मित्र बनते हैं पर पीठ पीछे अवगुणों का बखान कर बदनाम करते हैं।

प्र. 12. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

1. बीमारी के कारण परीक्षा न दे सकने पर प्रधानाचार्य को चिकित्सा-अवकाश के लिए एक आवेदन-पत्र लिखिए।

   परीक्षा केंद्र
   नई दिल्ली
   दिनाँक - 1 फरवरी, 2016
   विषय : चिकित्सा अवकाश के लिए आवेदन
   प्रधानाचार्य महोदय

   सविनय निवेदन है कि मैं आपके विदयालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मुझे कल सायंकाल से बुखार हो गया है। डाक्टर ने वायरल ज्वर बताया है और दवा के साथ चार-पाँच दिन पूर्ण विश्राम करने की सलाह दी है। इस कारण मैं अगले सप्ताह होनेवाली त्रैमासिक परीक्षा नहीं दे पाऊँगा। अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे 2 फरवरी से 6 फरवरी तक चिकित्सा-अवकाश प्रदान करें।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

अजय

कक्षा - दसवीं 'अ'

अनुक्रमांक -10

2. रुपये मँगवाने के लिए पिताजी को पत्र लिखिए।

कमरा नं 221

छात्रावास

दिल्ली पब्लिक स्कूल

नई दिल्ली - 110022

दिनाँक - 3-05-2016

पूज्य पिता जी,

सादर प्रणाम।

आपका पत्र प्राप्त हुआ। सभी की कुशलता जानकर प्रसन्नता हुई। मैं मन लगाकर पढ़ाई कर रहा हूँ। अर्धवार्षिक परीक्षा में मुझे 90 प्रतिशत अंकों के साथ कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है। मैं वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करना चाहता हूँ। मुझे कुछ सहायक पुस्तकों की आवश्यकता है तथा अगले महीने शुल्क भी जमा करना है। इस सबके लिए मुझे 3000 रुपये की आवश्यकता है। आप कृपया उक्त राशि भिजवा दें। मैं पढ़ाई के साथ-साथ अपने स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखता हूँ। दीदी व माताजी को प्रणाम। शेष कुशल।

आपका पुत्र,

अभिषेक

प्र. 13. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 25 से 30 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। [5]

1. ठंड के किए प्रयोग किए जानेवाले गरम कपड़ों के लिए विज्ञापन बनाइए।

अंजना स्वेटर

ठंड से बचना हुआ आसान,

अंजना स्वेटर साथ।

अंजना स्वेटर अपनाओ सालो-साल ठंडी भगाओ .....

2. चायपत्ती के लिए विज्ञापन बनाइए।

**अग्नि चाय**

कड़क चाय का प्याला

आपको बनादे मतवाला

यह है , अग्नि चाय का वादा